क्या खब्बू लोग जल्दी मरते हैं?

लंबे समय से एक मिथ चला आ रहा है कि खब्बू लोग जल्दी मरते हैं। यह बात सच है या झूठ, यह जानने के लिए 1992 में 10 लाख लोगों का एक सर्वे भी किया गया । ये लोग 10 से 86 साल के बीच की उम्र के थे। इस सर्वे से यह निष्कर्ष निकला कि खब्बू यानी बाएं हाथ से काम करने वाले लोग ज़्यादा जल्दी मरते हैं।

मगर कई लोगों को शंका बनी रही। हाल ही में इस मिथ का गहराई से अध्ययन करने के लिए लंदन विश्वविद्यालय के मैकमेनस और एलेक्स हार्टिगन ने अपने अध्ययन के लिए एक अनोखा तरीका अपनाया। इसके लिए उन्होंने 1897 से लेकर 1913 तक बनी कई सारी डॉक्यूमेंट्री फिल्मों का अवलोकन किया। इसमें उन्होंने यह देखा कि जब लोग अपने हाथ हवा में लहराते हैं तो दाएं व बाएं हाथ उठाने का अनुपात क्या है। व्यक्ति फिल्म में जिस हाथ को उठाते, वही उनका प्रमुख हाथ माना गया। इसके आधार पर शोधकर्ताओं ने यह अनुमान लगाने की कोशिश की कि इतने वर्षों में दाएं व बाएं का हाथ का इस्तेमाल करने वालों के अनुपात में क्या अंतर आया है।

इसके आधार पर उनका निष्कर्ष है कि समय के साथ बाएं हाथ का उपयोग करने वाले लोगों की संख्या में बढ़ोतरी हुई है। यदि खब्बू लोगों की मृत्यु कम उम्र में होती तो समय के साथ उनका अनुपात कम होना था। अतः उक्त अध्ययन से यह सिद्ध होता है कि खब्बू लोगों की मृत्यु कम आयु में नहीं होती है।

मैकमेनस का यह भी कहना है कि लोग दाएं हाथ का ज़्यादा उपयोग सिर्फ इसलिए करते हैं क्योंकि इसे उनकी आदत में शामिल किया जाता है।

हमारा समाज ही दाएं हाथ से काम करने के हिसाब से बना है। जैसे उद्योगों में काम आने वाली कई मशीनों का उपयोग सिर्फ दाएं हाथ से ही किया जा सकता है, बाएं हाथ वालों को इनको चलाने में दिक्कत होती है। सभी स्कूलों में बच्चों को दाएं हाथ से लिखने के लिए प्रेरित किया जाता है और साथ ही हमारे घरों में भी बच्चों को दाएं हाथ का उपयोग करना सिखाया जाता है। यह सिर्फ एक नियम है जिसमें बंधकर हम इस बात पर विश्वास कर लेते हैं कि दाएं हाथ से काम करना सामान्य बात है। इसी कारण से दाएं हाथ को सीधा और बाएं हाथ को उल्टा हाथ भी कहा जाता है। मैकमेनस के मुताबिक यह एक कोरी भ्रांति है और इसका कोई वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है। ***(स्रोत फीचर्स)***